Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छठी शताब्दी ईसापूर्व में पर्यावरण चेतना का विकास

डॉ. नीलम सोनी*

* असि. प्रोफेसर, रामसहाय राजकीय महाविद्यालय, शिवराजपुर, कानपुर (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव एवं पर्यावरण का गहरा संबंध रहा है। पर्यावरण के प्रति सभी धर्मों का दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है, भारतीय संस्कृति ने पर्यावरण को हमेशा से ही पूजनीय माना है। सिन्धु घाटी सभ्यता से हमें अंसख्य ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं जिसमें मानव के द्वारा, नीम, तुलसी, पीपल, बरगद, आदि अनेक वृक्षों को पूजने की परंपरा विद्यमान थी जो आज तक चली आ रही है प्रवृति के प्रति यह आस्था हमें पर्यावरण के प्रति सुरक्षा की भावना को जन्म देती है अगर हम पूर्व समय में मुड़कर देखेगें तो हम यह पायेंगे कि प्रकृति ने सिर्फ हमें साफ–स्वच्छ वातावरण दिया है जिसमे मानव ने अपना शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर जीवन को सफल बनाया है। अगर हम प्राचीन काल की बात करे तो उस समय का मानव पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक था। सिन्धु घाटी की सभ्यता में अनेक वृक्षों की पूजा की जाती थी कहीं न कहीं मानव की यह आस्था मानव एवं पर्यावरण के प्रति प्रेम के दर्शाती है। इसी तरह का प्रकृति प्रेम हमें वैदिक संस्कृति में देखने को मिलता है हमारे महाकाव्यों रामायण एवं महाभारत में भी मनोरम प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन हमे अनेक साहित्यक ग्रंथों में प्राप्त होता है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण मे श्री राम के द्वारा 14 वर्ष के वनवास का समय जो उन्होंने वनों में बिताया था अनेक साहित्यक ग्रंथो में उनका सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। महाभारत मे भी हमे अनेक मनोरम दृश्यों का उल्लेख साहित्यक ग्रंथों से प्राप्त होता है।

जैन एव बौद्ध धर्मों में भी पर्यावरण संरक्षण पर अत्यधिक महत्व दिया गया है दोनो ही धर्मों का मुख्य उद्देश्य था कि हम कार्यों को इस तरह से करे ताकि पर्यावरण को किसी तरह की हानि न पहुंचे क्योंकि मानव की हर गतिविधि पर्यावरण के अंतर्गत ही होती है हर इक सांस पर्यावरण पर ही निर्भर है हमारा यह दायित्व है कि हम पर्यावरण को असंतुलित होने से बचायें क्योंकि जब तक हमारा पर्यावरण सुरक्षित है तभी तक हमारा जीवन भी सुरक्षित है अगर पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो जायेगा तो मानव जीवन की गतिविधियाँ प्रभावित होगी। जिससे वह अपने जीवन को की प्रभावित करेगा।

पर्यावरण को सुरक्षित रखना हमारा दायित्व है ताकि हम अपनी आगे आने वाली पीढ़ी को एक सुन्दर स्वच्छ पर्यावरण उपहार स्वरूप दें। हमारे ऋषि, मुनियों ने भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति पर्यावरण की गोद में ही प्राप्त की हमारे मनीषियों ने चिन्तन एवं मनन स्वच्छ वातावरण में किया। उनके द्वारा किया गया प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप में उनका चिंतन समग्र भारतीय वाङ्मय में परिलक्षित होता है

प्राचीन भारतीय वाङ्मय के प्रथम सोपान ऋग्वेद के प्रथम उद्गाता ऋषि ने अग्नि में स्थित उर्जा और जीवन की पहचान कर सर्वप्रथम उसे स्तुत्य माना

अग्निमीडे पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।।

अर्थात सर्वप्रथम आधान किये जाने वाले यज्ञ को प्रकाशित करने वाले ऋतुओं के अनुसार यज्ञ संपादित करने वाले (देवताओं) का आह्वान करने वाले तथा धन प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ अग्नि देवता की मैं स्तुति करता हूँ। ऋग्वेद संहिता में इन्द्र, वरुण, पर्जन्य, सूर्य आदि सभी प्राकृतिक तत्वों में देवत्व का आधान किया गया है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति से प्रेम करने की विशेष परंपरा रही है आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व पर्यावरण के प्रति बुद्ध का लगाव देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि वे मनुष्य के कृत जानने में सक्षम थे इसलिये उन्होंने न सिर्फ खुद प्रकृति से प्रेम किया वरन् संघ के भिक्षुओं को विशेष निर्देश दिये कि उनके किसी भी कार्य से पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे क्यों कि ऐसा माना जाता है कि जिस व्यक्ति का जन्म जैसे वातावरण में होता है वह जीवन पर उसी वातावरण को पसन्द करता है। चाहे गौतम बुद्ध का जन्म हो या सिद्धार्थ से बुद्ध बनने की प्रक्रिया और उसके बाद का उपदेशक जीवन या महापरिनिर्वाण की प्राप्ति सभी प्रकृति के सौम्य घटा में घटित हुई। यही कारण है कि बौद्धधर्म के विकास में कृषि, वन, वृक्ष, और पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बुद्ध के उपदेशों मे भी कृषि, वन और वृक्ष इत्यादि उदाहरण मिलते है। बौद्ध शिक्षण में पेड़–पौधों, मानव, पशु–पक्षियों और प्रकृति से एकदम निकट का रिश्ता स्थापित किया गया है जिसमें सदस्य या अदृश्य सभी प्रकार के जीव जंतुओं के कल्याण के लिये सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं। बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक में भी पर्यावरण से संबंधित उपदेश दिये गये हैं। विनय पिटक जिसे बौद्ध धर्म की आचार संहिता कहा जाता है पर्यावरण को संतुलित बने रहने के उद्देश्य से पेड़ काटने से विरत् का उपदेश दिया गया है अगर कोई भिक्षु किसी तरह का पेड़ काटता है तो उसे पाराजिक नामक अपराध में रखा जाता है। इतना ही नहीं बौद्ध परंपरा में बारिश के मौसम में तीन महीने वर्षावास का विधान है जिसमें किसी भी भिक्षु को बाहर निकलने से मना किया गया है ता कि नये पौधों, हरे तृणों का मर्दन न हो तथा एक इंद्रिय वाले जीव वनस्पति को पीड़ा न पहुँचे। बौद्धधर्म का मत है कि सभी जीव–जंतुओं, वनस्पतियों व मनुष्यों का जीवन एक दूसरे से संबंधित है। इसलिए व्यक्ति को सभी जीवों का सम्मान

करना चाहिये। बौद्ध परम्परा अपने समस्त ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों सहित प्राकृतिक विश्व के साथ अपने अंतर को जोड़ने के लिये प्रोत्साहित करती है क्यो कि बौद्ध दृष्टिकोण से किसी भी वस्तु का भिन्न अस्तित्व नहीं है। पर्यावरण की अशुद्धता मन को प्रभावित करती है और मन की अशुद्धता पर्यावरण को दूषित करती हैं। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिये हमे अपने मन को शुद्ध करना होगा। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता को बहुत महत्व दिया उन्होंने जल संरक्षण के उपाय किये और भिक्षुओं को जल संसाधनों को दूषित करने से रोका भगवान बुद्ध के उपदेशों में प्रकृति वन वृक्ष और समस्त जीवों का कल्याण महान भूमिका निभाते है। भगवान बुद्ध ने बोधि वृक्ष के नीचे बैठकर ज्ञान के प्रकाश से आलोकित हुए, बुद्ध की विचारधारा में उनके उपदेशों में तथा संदेशों में वृक्षों के प्रति प्रेम तथा अन्य प्राणियों के प्रति असीम अनुराग परिलक्षित होता है इसी, अनुराग में बौद्ध दर्शन का पर्यावरणीय में नैतिकता के तत्व अन्तनिहित है। महात्मा बुद्ध ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व पथ प्रशस्त कर दिया था, नियम बना दिये थे इन नियमों का सिर्फ उन्होंने स्वयं अनुपालन किया बल्कि भिक्षुओं नागरिकों और श्रेष्ठ जनों को भी इसे अपनाने के लिये प्रेरित किया। गौतम बुद्ध ने स्वयं अपने को प्रकृति मय कर लिया, प्रकृति की गोद लुंबिनी वन में जन्म लिया बोधगया में निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया।

मृगो से पूर्ण हरे-भरे वन ऋषिपत्तनम, मृगदाय, सारनाथ में धर्मोपदेश देना प्रारम्भ किया और प्रकृति की गोद में साल वृक्षों के नीचे कुशीनगर में शरीर त्याग दिया। गौतम बुद्ध जीवन भर के स्वयं भिक्षुओं के साथ आम्रवन, वेणुवन, सिसिपावन, न्यग्रोधवन, जम्बुवन लटिठ्कावन आदि में रहे। उन्होंने सम्पूर्ण उपदेशो के लगभग दो तिहाई उपदेश श्रावस्ती के जेतवनराम और पूर्वराम बिहार में ही दिये। पालि त्रिपिटक में कहा गया है कि प्रकृति में पाई जाने बाली सभी चीजें एक दूसरे से जुड़ी हैं। अगुत्तर निकाय के अनुसार बुद्ध का कहना था कि प्रत्येक वन क्षेत्र वन्य जीवों का घर है जब कोई भिक्षु वन क्षेत्र में निवास करे तो उसे उन जीव-जन्तुओं की सुरक्षा करना चाहिये बौद्ध धर्म का प्रथम नीतिगत वचन अहिंसा है बुद्ध का मानना था कि जो व्यक्ति जीव हिंसा कर जीवन यापन करता है उन्हें अपने कर्मो का फल भोगना पड़ता है। बौद्ध ग्रन्थ संयुक्त निकाय में फलदार वृक्ष लगवाने, पुल बंधवाने कुएँ खुदवाने, प्याऊ चलवाने आदि को महान पुण्य कार्य बताया गया है। जिसके बल पर मनुष्य स्वर्ग लोक की प्राप्ति करता है। बौद्ध साहित्य त्रिपिटक में भी पर्यावरण से संबंधित बहुत से उपदेश प्राप्त होते हैं। विनयपिटक जिसे बौद्ध धर्म की 'आचार संहिता' कहा जाता है में बौद्ध संघ और भिक्षु भिक्षुणियों के आचार नियम के साथ ऐसी विभिन्न बातों का वर्णन है जिसमें पर्यावरण एवं पारिस्थितकीय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है। विनयपिटक में वातावरण को संतुलित बने रहने के उद्देश्य से पेड़ न काटने का उपदेश दिया गया गया है, इसके साथ ही भिक्खु पतिमोक्ख में प्राकृतिक तत्वों की सुरक्षा की भावना के कुछ नियम बताये गये है।

महावीर स्वामी ने भी पर्यावरण सुरक्षा से सम्बंधित अनेक उपदेश दिये हैं। उनका मानना था कि किसी भी जीवित प्राणी को मारना या चोट पहुंचाना स्वयं को मारने या चोट पहुंचाने के समान है दूसरों की करुणा स्वयं के प्रति करुणा है, इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि लगभग सभी धर्मो के साथ-साथ हैं कि साथ प्राचीन ग्रंथों में पर्यावरण संबधी निहितार्थो की एक अंतर्निहित प्रकृति है, जो प्रकृति और उसकी रचनाओं के प्रति आचरण का पालन करना था। जैन धर्म मूल रूप से पाँच सिद्धान्तों पर आधारित है, अंहिसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रम्हचर्य इन्ही मार्गो पर चलकर भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा की जा सकती है। जैन धर्म से सम्बंधित साहित्य में न केवल जीव जन्तु वरन् पेड़ पौधों पर दया करने का उपदेश दिया गया है उनका मानना था कि उपभोग से प्राकृतिक संसाधन नष्ट होते है जो आगे चलकर जलवायु और प्रकृति के प्रदूषित होने का कारण बनते है जैन धर्म अपने जीवन जीने के निर्धारित तरीकों के माध्यम से पर्यावरण की बहुत रक्षा करता है जैन धर्म के सिद्धांतों में अहिंसा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। पौधों, सब्जियों, फलों और अनाजों की तुलना में कीड़े और जानवर अधिक विकसित माने जाते है इसलिए इस धर्म में अन्य सभी जीवित प्राणियों के लिये खाद्य श्रंखला को बरकरार रखते हुए शाकाहारी भोजन को प्रोत्साहित करता है। जैन धर्म का प्रमुख सिद्धान्त बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय तक ही सीमति न होकर उससे कही अधिक बढ़कर सर्वजीय हिताय और सर्वजीत सुखाय तक है सम्पूर्ण जैन साहित्य में पर्यावरण के विषय में सूक्ष्म चिन्तन वर्णित है। जैन धर्म का चिन्तन मौलिक सिद्धांतों से अनुप्राणित है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को पर्यावरण के प्रथम सवांहक पुरुष माने जाते है भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि वाणिज्य और कला का सिद्धांत दिया उन्होंने पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति में जीव की अवधारणा का सिद्धांत प्रतिपादित किया साथ ही पर्यावरण का दायरा असीमित कर दिया। जैन धर्म समस्त जीवों के अस्तित्व एवं विकास में आस्था रखता है। जैन ग्रन्थों में पर्यावरण सरंक्षण के लिये मानव चेतना को जाग्रत करना आवश्यक बताया गया है। अगर मानव में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जाग्रत है तो वह कभी भी पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने की नही सोचेगा बल्कि सर्वाधिक विकास के बारे में सोचेगा। जैन साहित्य के अनुसार, जनजागरण के द्वारा जो भी जैन सिद्धांतों को जीवन में अपनाते हुये सभी जीवों को समान माना गया है एवं उनके प्रति मैत्री भाव का विचार रखा गया है अगर हम उनके प्रति हिंसा की नीति को अपनायेंगे तो पर्यावरण प्रदूषण उत्पन्न होगा। महावीर स्वामी ने जिओ और जीने दो का सिद्धांत दिया था। जैन साहित्य ग्रन्थ आचारांग सूत्र में षटकाय जीव निकाय के संरक्षण की बात प्रमुखता से की गयी है। जैन धर्म में श्रमणाचार एवं श्रावकाचार की वैज्ञानिकता को पर्यावरण के सन्दर्भ में प्रतिष्ठित किया गया है। जैन धर्म में पंच महाव्रत अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय हैं। जिनमें अंहिसा को पर्यावरण संरक्षण में सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जैन धर्म एवं दर्शन पर्यावरण चेतना व पर्यावरण संरक्षण के चिंतन को संपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पर्यावरण के प्रति लगाव एवं संरक्षण की बात सभी धर्मों में की गई है। पर्यावरण पर धर्म का प्रभाव हमेशा ही रहा था कहीं न कहीं धर्म से जैन एवं बौद्ध धर्म दोनों ही धर्मों का प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण था। वर्तमान समय में पर्यावरण के प्रति मानवों के लापरवाही के परिणाम स्वरूप में असंतुलन की स्थिति बढ़ती जा रही है। अगर हम अभी नहीं चेते तो इसका परिणाम घातक जायेगा हमारा ये दायित्व होना चाहिये कि हम पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान दे तथा दूसरों को भी जागरूक करें तभी हम आगे आने वाली पीढ़ियों को भी साफ और सुन्दर पर्यावरण उपलब्ध हो सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. निरंजना श्वेतकेतु बोरा-बौद्ध और जैन दर्शन के विविध आयाम प्रकाशक, निरंजना वोरा 2010, कृष्णा ग्राफिक्स, नारणपुरा जूना

गाँव अहमदाबाद
2. प्रेम सुमन जैन–जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, प्रकाशक साहित्य निकेतन जयपुर, मुद्रण, 2022
3. डॉ. शिवप्रसाद–जैन धर्म और पर्यावरण संरक्षण, पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी, 2003
4. Bhage Handra Jain Bhaskar-जैन धर्म और पर्यावरण प्रकाशक New Bhartiya Book corporation Edition-2019
5. हरिवंश पुराण सर्ग 18/55
6. Ignited.in
7. Encyclopedia of Jainism
8. https://www.pmindia.gov.in7 संघ
9. गीतांजली कुमारी–धम्मपद में पर्यावरणीय संरक्षण का विश्लेषण, 2019 Jetir March 2019, Volume 6, Issue 3
10. डॉ0 ध्रुव कुमार–बौद्ध धर्म और पर्यावरण (Mediamorcha.com)
प्रभात प्रकाशन
11. Law Bhoomi
12. भारत आर्य–पर्यावरण संरक्षण में बौद्ध दर्शन का योगदान (Introduction Journal of Multidisciplinary Research and Development Vol 4: ISsue 6 : June 2017
13. डॉ0 शबीना बेगम–बौद्ध धर्म में पारिस्थिकी चेतना–प्रवीन मिश्रा
14. पर्यावरण संरक्षण का सिद्धांत जैन दर्शन में daylife.page (प्रो0 डॉ0 सोहन राज तातेड़)
15. Jainavenue-https://jainavenue.org>Jainism and…..
16. डॉ0 रेनू जैन–जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण (शोध मंथन) तश्रि. दखत चजखख 2023
17. Igneted minds journals (https://ignetted.in>)
18. नीतू कुमारी–जैन आगम साहित्य के पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण (शोधपत्र) Vol-7 Issues-4 December 2019.

****